पंचम अध्याय

''प्रसाद के उपन्यासों में नारी पात्र-वर्गीकरण''

हिन्दी साहित्य में प्रसाद अपने विकासोन्मुखी प्रतिभा के साथ अवतरित हुए। उन्होने अपने साहित्य में देश, समाज तथा युगीन परिस्थितियों का समग्र चित्रण किया है। प्रसाद साहित्य में विषय वैविध्य सहज दिखाई देता है उन्होने विविध विषयों पर आधारित साहित्य रचना की है। प्रसाद के साहित्य में मौलिकता स्पष्ट दिखाई देती है। प्रसाद ने भारतीय संस्कृति और परंपरा की धरोहर को अपने साहित्य द्वारा आगे बढ़ाने का सफल कार्य किया है। संक्षेप में, हम कह सकते है कि प्रसाद का पूरा साहित्य भारत के उज्ज्वल एवं गौरवमय परंपरा को उजागर करता है।

प्रसाद ने अपने साहित्य में पात्र चरित्र-चित्रण पर अधिक जोर दिया है जिसमें पात्रों का चरित्र-चित्रण अत्यंत सजीव एवं सफल बन पड़ा है। प्रसाद के पात्र सशक्त भावाभिव्यक्ति करते है; मानो उन्होने पात्रों में प्राण फूंक दिया है। प्रसाद ने अपने साहित्य में नारी पात्रों का सवाक एवं सरूप चित्रण किया है। 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में उन्होंने अनेक उल्लेखनीय नारी चरित्रों का निर्माण किया है। इनके उपन्यासों में नारी पत्नी, प्रेमिका, माता, विधवा, वेश्या, भिक्षुणी तथा देवदासी आदि अनेक रूपों में चित्रित हुई है। यह नारी-पात्र अपने युग का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। यह नारियाँ केवल पारिवारिक स्तर पर ही नहीं बल्कि समाज, राजनीति, धर्म, अर्थ आदि विभिन्न स्तरों पर अपना प्रभाव डालते हुए नजर आती है। प्रसाद का ''नारियों के प्रति अत्यन्त उदार एवं गहन दृष्टिकोण था। वे चाहते थे कि नारियाँ रूढ़ियों से मुक्त होकर मूल्य-मर्यादा युक्त जीवन व्यतीत करें। उन्हें सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकार प्राप्त हों और समाज में उनका पूर्ण सम्मान हो। वे पुरुष की वासना एवं हवस की शिकार मात्र बनकर प्रवंचना का जीवन व्यतीत न करें... वे नारी की पूर्णता चाहते थे।''[1]

तात्पर्य प्रसाद का नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण था।

प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में चित्रित नारियाँ ऐतिहासिक एवं आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करती है। प्रसाद दो युगों के नारी चित्रण में सफल सिद्ध हुए है। प्रसाद ने व्यक्तिगत विशेषता के आधार पर सभी तरह के नारी पात्रों को अपने उपन्यास में स्थान दिया है। प्रसाद द्वारा चित्रित इन नारी चरित्रों में कुछ नारी पात्र आदर्शता को प्रस्तुत करते हुए त्याग, संयम एवं शक्ति का संदेश देते हैं, तो कुछ नारी-पात्रों में नारी जीवन की हीन वृत्ति का वास्तव चित्रण प्रस्तुत हुआ है। प्रसाद ने एक ओर नारी को महिमामयी रूप में प्रस्तुत किया है, तो दूसरी ओर उसके पतित रूप का भी यथार्थ चित्रण किया है। इस प्रकार प्रसाद के उपन्यास में गौरवमयी-पतीत, समाजसेवी-कपटी, पतिव्रता-वेश्या, वीरांगना-वारांगना, तपस्वी-देवदासी, गृहिणी-विरक्ता, विदेशी नारी-भारतीय नारी आदि विभिन्न रूपों में नारी चित्रण हुआ है। प्रसाद के उपन्यासों में नारी-पात्रों का वर्गीकरण निम्मलिखित रूप से हुआ है -

5.1 कथा की दृष्टि से नारी पात्र

उपन्यास में कथा प्रवाह की धारा को पात्रों की सहाय्यता से आगे बढ़ाया जाता है। अनेक पात्रों द्वारा कथा प्रवाह विकसित होता है। कुछ पात्र उपन्यास में अंतिम लक्ष्य का सफलतापूर्वक निर्वाह करते है, तो कुछ पात्र बीच में ही आकर कथा प्रवाह को गतिमान बनाने में सहायक होते है। साथ ही कुछ पात्र अपनी अलग पहचान बनाने में असफल होते है; परन्तु अन्य पात्रों के चरित्र विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रसाद के उपन्यासों में अलग-अलग प्रकार के नारी पात्र आए है जो कथा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते है। कुछ पात्र कथाबीज से जुड़े होते है तो कुछ कथा को आगे बढ़ाने में योगदान देते है। तात्पर्य, कथावस्तु को ध्यान रखते हुए नारी पात्रों को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है -

1] प्रमुख नारी-पात्र

2] गौण नारी-पात्र

इस विभाजन के अंतर्गत नारी-पात्रों का विश्लेषण इस प्रकार हुआ है -

5.1.1 प्रमुख नारी-पात्र

जो पात्र कथा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते है, जिनका कथा के आरंभ से अंत तक संबंध होता है, जो कथाबीज से जुड़े रहते है, जिनके द्वारा उपन्यासकार अपने मन्तव्य को पाठकों तक पहुँचाने में सफल होता है,

ऐसे पात्रों को प्रमुख पात्र कहा जाता है। प्रमुख पात्रों में हम नारी पात्रों का विचार कर रहे है। अतः प्रसाद के उपन्यासों में आए प्रमुख नारी पात्र उपर्युक्त विशेषता से युक्त नजर आते है।

किसी भी उपन्यास में ऐसे प्रमुख पात्रों की संख्या एक से ज्यादा हो सकती है, तो कुछ उपन्यास में यह संख्या एक भी हो सकती है। उपन्यासकार की लेखनी से चित्रित पात्रों में से संपूर्ण चरित्र-चित्रण का विकास वहन करने वाले सभी पात्र प्रमुख-पात्र कहे जा सकते है। प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में प्रमुख पात्रों की संख्या कुल मिलाकर छः है। प्रमुख पात्र उपन्यास में अपना अद्वितीय स्थान रखते है, इनके बिना पूरी कथावस्तु विश्रृंखलित हो सकती है। कथा के साथ प्रमुख पात्र का घनिष्ट संबंध होता है। प्रमुख पात्र कथा के सूत्रधार होते है। उनका कथा के साथ प्रत्यक्ष संबंध होता है।

प्रसाद के उपन्यासों में प्रमुख पात्र निम्नलिखित है -

उपन्यास का नाम	पात्र का नाम
1] कंकाल	1] किशोरी
	2] तारा
2] तितली	1] तितली
	2] शैला
3] इरावती	1] इरावती
	2] कालिन्दी

प्रसाद के उपन्यासों के नारी पात्र असामान्य है, जिन्होने प्रसाद के विचारों को, भावों को सहज रूप से पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। प्रसाद ने इन पात्रों के माध्यम से युगीन विशेषता को धारण करनेवाले नारी-चरित्रों का निर्माण किया है। प्रसाद के सभी नारी-पात्र विवेकशील तथा स्वाभिमानी है। प्रसाद के उपन्यास का हर नारी पात्र एक अलग विशेषता के साथ पाठकों के सम्मुख उपस्थित होता हैं, यह नारी पात्र निम्नलिखित है -

5.1.1.1 **किशोरी (कंकाल)**

किशोरी 'कंकाल' उपन्यास का प्रमुख नारी पात्र है, जो अमृतसर के व्यापारी श्रीचन्द की पत्नी है। किशोरी सन्तान की चाह के कारण अपने बाल सखा निरंजन को अपना सर्वस्व अर्पित करती है। किशोरी को निरंजन से पुत्र की प्राप्ति होती है। इसी वजह से किशोरी और श्रीचन्द के रिश्ते में दूरियाँ आ जाती है। किशोरी

श्रीचन्द से अलग रहती है। उसके घर में निरंजन का भण्डारा प्रायः होता रहता है। किशोरी अपना पूरा समय दान-धर्म में बिताती है। किशोरी का पुत्र विजय बाल-विधवा घण्टी के चंगुल में फँसता है और किशोरी से दूर चला जाता है। विजय के चले जाने के पश्चात् किशोरी और निरंजन में अनबन बढ़ती है और निरंजन किशोरी को छोड़कर चला जाता है। श्रीचन्द फिर से उसके जिंदगी में आता है। किशोरी मोहन को दत्तक पुत्र के रूप में अपनाती है। मगर पुत्र विरह में किशोरी अंतिम सांस तक पड़पती रहती है। अंत में विजय से मिलकर ही उसका जीवन समाप्त हो जाता है।

प्रसाद ने किशोरी के माध्यम से एक ऐसी नारी हमारे सामने प्रस्तुत की है जो पत्नी और माता दोनों रूपों को निभाने का प्रयास करती है और इस प्रयास में उसके जीवन की त्रासदी होती है। वह ना तो पूर्ण रूप से पतिव्रता धर्म का निर्वाह करती है ना ही माता के कर्तव्य को निभा सकती है। फिर भी उसमें पुत्र वात्सल्य है, प्रेम है। किशोरी संघर्षरत पात्र है। वह हर स्थिति में सयम् से लढ़ने का प्रयास करती है परंतु बदले में उसे उपेक्षा मिलती है।

5.1.1.2 तारा (कंकाल)

प्रसाद के 'कंकाल' उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण नारी पात्र है तारा। तारा विधवा रामा की पुत्री है। तारा काशी में घरवालों से बिछड़कर कुटिनी के हाथ लगती है। उसे लखनऊ ले जाकर वेश्या बनाया जाता है। मंगल की मदद से तारा वेश्यालय से भाग निकलती है। तारा के पिता उसे स्वीकारने से इन्कार करते है। तारा को मंगल का आसरा मिलता है। तारा मंगल पर अपना सर्वस्व न्योच्छावर करती है। इस प्रेम का बीज तारा के गर्भ में पलने लगता है। मंगल तारा से शादी करने के लिए तैयार हो जाता है किंतु शादी के दिन ही उसे छोड़कर भाग जाता है। किस्मत की मारी तारा अनेक बार आत्महत्या का प्रयत्न करती है। तारा बच्चे को जन्म देकर पुनः मृत्यु की खोज में अकेले ही निकल पड़ती है। तारा 'यमुना' बनकर किशोरी की सेवा में मग्न हो जाती है। किशोरी का पुत्र विजय यमुना पर आसक्त होता है; परंतु यमुना उसकी केवल बहन बनी रहना पसंद करती है। यमुना विजय के जीवनांत तक उसका साथ देती है; इतना ही नहीं उसकी मृत्यु के पश्चात अन्तिम क्रिया-विधि की भी व्यवस्था करती है। तारा परिस्थिति से जूझती हुई जीवन को एक अलग मोड़ देकर एक नई राह पर चलती है; जिससे कथा में एक अलग प्रवाह प्रवाहित होता है। वह अपने व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने में सफल होती है।

5.1.1.3 तितली (तितली)

तितली 'तितली' उपन्यास का प्रमुख नारी पात्र है। तितली एक ग्रामबाला है। वह अपने बाल सखा मधुबन से प्रेम करती है। इसीलिए वह जमींदार इन्द्रदेव के साथ शादी के लिए इन्कार कर देती है। तितली सभी विरोधों को ठुकराते हुए मधुबन से प्रेम-विवाह करती है। उसके पति मधुबन पर हत्या और चोरी का इल्जाम लगता है। मधुबन तितली को छोड़कर भाग जाता है। इस विचित्र मनोस्थिति में वह धैर्य के साथ सारे परिवार का खयाल रखती है। तितली अपने जेवर बेचकर बंजरिया को बचाती है और अनाथ लड़कियों के लिए पाठशाला चलाती है। तितली बड़ी दृढ़ता के साथ अपने जीवन में आई हर मुसिबत का ड्टकर मुकाबला करती है। तितली अनेक लोगों का कल्याण करती है और समाज के सामने स्वावलंबन का आदर्श प्रस्तुत करती है।

तात्पर्य, तितली द्वारा उपन्यासकार ने हमरे सम्मुख एक ऐसे सशक्त नारी पात्र को साकार किया है जो परिस्थिति के सामने झुकती नहीं वरन परिस्थिति से संघर्ष कर अपने जीवन को आगे बढ़ाती है तथा केवल स्वयं के लिए नहीं बल्कि औरों के लिए भी जीती है।

5.1.1.4 शैला (तितली)

शैला 'तितली' उपन्यास का प्रमुख पात्र है। शैला विदेशी नारी है। जमींदार इन्द्रदेव के साथ वह भारत आती है। शैला को भारतीय संस्कृति का आकर्षण पहले से ही था। उसके माता-पिता भारत में नील कोठी में रहते थे। शैला बाबा रामनाथ जी से हितोपदेश पढ़ती है। इन्द्रदेव के घरवाले शैला को वेश्या समझते है मगर वह अपने स्नेहमयी आचरण से सबका दिल जीतने में कामियाब होती है। शैला हिन्दू-धर्म की दीक्षा लेती है। शैला इन्द्रदेव के साथ विवाह करके पूरी तरह से भारतीय रंग में रंग जाती है और वह धामपुर गाँव का सुधार एवं विकास करना चाहती है। उपन्यास में शैला भारतीय संस्कृति के समन्वय का प्रतिक है। वह विदेशी होते हुए भी अपने प्रेम के लिए भारतीय जीवनादर्श का स्वीकार करती है।

5.1.1.5 इरावती (इरावती)

इरावती 'इरावती' उपन्यास का महत्त्वपूर्ण नारी पात्र है। इरावती पाटलीपुत्र की नगर नर्तकी है। इरावती अग्निमित्र की असफल प्रेमिका के रूप में जानी जाती है। इरावती महाकाल मंदिर की देवदासी है। वह अपने नृत्याविष्कार से ईश्वराधना करती है। एक दिन बृहस्पतिमित्र मंदिर में विलासिता के प्रसार का आरोप लगाकर, इरावती को बंदी बनाकर बौद्ध विहार में भेज देते है। विहार में इरावती के नृत्य करने के कारण उस पर संघ

नियमोलंघन का आरोप लगाकर उसे विहार से निकाल दिया जाता है। इरावती दुर्भाग्य से सम्राट बृहस्पतिमित्र के अंतःपुर में पहुँचायी जाती है। इरावती कालिन्दी की मदद से वहाँ से छूट जाती है। इरावती कालिन्दी की अनुचर बन जाती है। जनम की दुखियारी इरावती अंत तक अग्निमित्र की एकनिष्ठ प्रेमिका बनी रहती है। इरावती जीवन के हर मोड़पर अपने शील की रक्षा करने में सफल होती है। इस प्रकार इस उपन्यास में इरावती शुद्ध आचरण से अपने व्यक्तित्व को उजागर करती दिखाई देती है। वास्तव में वह एक नृत्यांगना है किंतु उसका चरित्र कही भी कलंकित दिखाई नहीं देता।

5.1.1.6 कालिन्दी (इरावती)

कालिन्दी 'इरावती' उपन्यास का प्रमुख पात्र है। कालिन्दी नंदवंश की कन्या है। मौर्य सम्राट शतधनुष ने कालिन्दी को अपने अंतःपुर में जबरदस्ती से रखा था। कालिन्दी अपने इस अपमान की वजह से मौर्य साम्राज्य के विनाश का बीड़ा उठाती है। कालिन्दी इस योजना को सफल बनाने के लिए अग्निमित्र को अपने पक्ष में करती है। कालिन्दी 'स्वस्तिक दल' का निर्माण करती हैं, जिसकी सहाय्यता से वह मौर्य साम्राज्य के विरोध में कार्य करती है। कालिन्दी अग्निमित्र पर आसक्त हैं। कालिन्दी अपने चतुर चालों से इरावती को सम्राट बृहस्पतिमित्र की कैद से आजाद कराती है। इस तरह उपन्यास के आरंभ में अत्यंत साधारण नजर आनेवाली कालिन्दी, एक विद्रोहीणी क्रान्तिकारी रूप में हमारे सामने आती है। उपन्यासकार ने कालिन्दी के चरित्र द्वारा नारी के उस रूप को हमारे सामने रखने का प्रयास किया है; जो अपमानित होने पर पुरुष से विद्रोह करती है तो दूसरी ओर मुसीबत में फँसी नारी की सहायता करना अपना धर्म मानकर उसे मुक्त कराने का सफल प्रयास भी करती है।

तात्पर्य प्रसाद के उपर्युक्त तीनों उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्र अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर पाठकों के मन में अपना एक विशेष स्थान बना लेते हैं। यह प्रमुख पात्र अपनी एक अलग छबी पाठकों के मनपर बिंबित करने में सफल सिद्ध हुए है।

5.1.2 गौण नारी-पात्र

गौण पात्रों द्वारा मुख्य पात्रों का चरित्रोद्घाटन होता है और कथा को गति मिलती है। वे कथा के बिखरे हिस्से को जोड़ते है। अतः गौण पात्र कथा विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते है, जब कि इनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व न के बराबर होता है क्योंकि गौण पात्रों का संबंध संपूर्ण कथा से नहीं बल्कि कथा विकास में सहायक घटना से होता है। अतः प्रसंग की समाप्ति पर ऐसे पात्रों का अस्तित्व समाप्त होता है। गौण पात्र दो प्रकार के होते

है - एक जो बड़ी कथा के साथ रहते है और दूसरे छोटी प्रासंगिक कथा से जुड़े रहते है। इस दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों में आए गौण पात्र इस प्रकार है -

1] कंकाल - 1. घण्टी
2. गाला
3. लतिका
4. सरला
5. सुभद्रा
6. नन्दो चाची

2] तितली - 1. श्यामदुलारी
2. माधुरी
3. राजकुमारी
4. नन्दरानी
5. अनवरी

3] इरावती - 1. उत्पला
2. मणिमाला

प्रसाद के गौण पात्र भी कथाविकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते है। उपर्युक्त गौण नारी पात्रों का परिचय इस प्रकार है -

5.1.2.1 घण्टी (कंकाल)

घण्टी 'कंकाल' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। वह चंचल स्वभाव क़ी, स्वतंत्र विचारवाली, अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करनेवाली, सामाजिक बंधन को न माननेवाली, उच्छृंखल स्वभाववाली नारी है। वह बाल विधवा जीवन के नियमों का पालन नहीं करती; क्योंकि उसके स्वभाव में विद्रोह भावना है। इन व्यक्तिगत विशेषताओं की वजह से उसका प्रेमी विजय उससे दूर हो जाता है। वह पादरी के दुर्व्यवहार का शिकार बन जाती है। परिणामतः बाह्य और अंततः तनाव के कारण वह मानसिक रूगो बन जाती है किन्तु देर से ही सही ठीक हो जाती है और अपने जीवन को एक नई राह पर ले जाती है और सेवाकार्य करने लगती है।

तात्पर्य, प्रसाद ने इस गौण पात्र द्वारा नारी जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत किया है। घण्टी बाल-विधवा

होने की वजह से वह अपने जीवन के अप्राप्य क्षणों को पाने का प्रयास करती है; किन्तु वहाँ भी वह सफल नहीं होती, बल्कि एक ऐसे मोड़पर पहुँच जाती है जहाँ अपमान के सिवा कुछ प्राप्त ही नहीं होता।

घण्टी के माध्यम से नारी की आन्तरिक पीड़ा, घुटन, विवशता एवं सहनशीलता व्यक्त हुई है।

5.1.2.2 गाला (कंकाल)

गाला 'कंकाल' उपन्यास का गौण पात्र है। वह डाकू बदन गूजर की पुत्री है। गाला नारी स्वतंत्रता की पक्षधर है। गाला नये (विजय) पर आसक्त है; परंतु विजय के शादी से इन्कार के कारण गाला का स्वाभिमान जागृत हो जाता है। गाला भी अपने घर में पल रहे व्यक्ति के साथ शादी करने से इन्कार करती है। गाला मंगल के साथ पाठशाला चलाती है। अंत में, गाला मंगल के साथ प्रेमविवाह करती है। इस तरह प्रसाद ने गाला के चरित्र के द्वारा एक ऐसी नारी को हमारे सम्मुख उपस्थित किया है कि जो स्वाभिमानी है। जिसमें विरोध करने की क्षमता है; जो अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करती है।

5.1.2.3 लतिका (कंकाल)

लतिका 'कंकाल' उपन्यास का गौण पात्र है। वह पादरी बाथम की पत्नी है। लतिका ने हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाई धर्म की दीक्षा लेकर बाथम से विवाह किया है। बाथम घण्टी पर आसक्त होता है। लतिका अपने पति के इस आचरण से आहत होकर उसके साथ सम्बन्ध-विच्छेद करती है। लतिका अपनी सहेली सरला के साथ पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश करती है। वह अपनी सारी सम्पत्ति 'भारत संघ' को दान में देती है। लतिका स्त्रियों के लिए पाठशाला चलाने की इच्छा रखती है। इसप्रकार प्रसाद ने लतिका के सेवाभावी रूप को चित्रित किया है।

लतिका में सेवाभावी वृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। बाथम से प्रेम विवाह करने वाली लतिका उसके गलत आचरण से आहत होकर उससे अलग रहने लगती है। वह अपने विचारों पर डटे रहकर, समाज का सामना करते हुए धर्मांतर के बाद भी अपनी संस्कृति से जुड़ जाती है।

5.1.2.4 सरला (कंकाल)

सरला 'कंकाल' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। सरला लतिका की सहेली है। उसने ईसाई धर्म की दीक्षा ली है। सरला ने बहुत साल पहले गंगासागर पर मकर-संक्रान्ति के योग पर अपने पुत्र को खो दिया था। सरला लतिका के साथ पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश करती है। सरला 'भारत संघ' की प्रमुख महिला कार्यकर्ती बनती है, वही पर उसका बिछड़ा हुआ पुत्र मंगल उसे मिल जाता है। सरला एक सुहृदया, ममतामयी तथा उच्च-

विचारोंवाली महिला है।

5.1.2.5 सुभद्रा (कंकाल)

सुभद्रा 'कंकाल' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। वह आर्य-समाज की प्रचारिका है। इसी सिलसिले में सुभद्रा का परिचय मंगलदेव और तारा से होता है। सुभद्रा तारा के सामने मंगल से विवाह करने का प्रस्ताव रखती है। सुभद्रा आर्य-समाज की विदुषी महिला है।

5.1.2.6 नन्दो चाची (कंकाल)

नन्दो चाची 'कंकाल' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। वह तारा की चाची है। चाची मंगलदेव को तारा के पतित होने का संकेत देती है। चाची के कारण ही मंगल और तारा का विवाह टूट जाता है। चाची कुछ दिन तारा को अपने साथ रखती हैं, उसका सबकुछ बेच कर उसे घर से बाहर निकालती है। यही चाची तारा के पुत्र मोहन को पाल-पोसकर बड़ा करती है। तारा के पुत्र मोहन को चाची दत्तक पुत्र के रूप में श्रीचन्द को सौंप देती है। इसी दौरान उसकी खोई हुई पुत्री घण्टी मिल जाती है। उपन्यास के शुरूआत में चाची का छली, धूर्त स्वरूप दिखाई देता है; परंतु बाद में उसको ममतामयी माता के रूप में प्रस्तुत किया है।

5.1.2.7 श्यामदुलारी (तितली)

श्यामदुलारी 'तितली' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। श्यामदुलारी जमींदार इन्द्रदेव की माता है। वह अत्यंत सुस्वभावी, चरित्र संपन्न कुलशिल नारी है। अतः उसे इन्द्रदेव और शैला का रिश्ता नापसंद हैं। वह इस रिश्ते का विरोध करती है; किन्तु बाद में उसमें परिवर्तन आता है और वह इन्द्रदेव तथा शैला के विवाह को मान्यता देती है तथा अन्तर्जातीय विवाह का भी समर्थन करती है। तात्पर्य, श्यामदुलारी दो रूपों में हमारे सामने आती है; प्रारंभ में उसका संस्कारी, कट्टर रूप सामने आता है, तो बाद में सर्वधर्म समभाव के अनुरूप अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन करने वाला, समय के साथ परिवतीर्तत होनेवाला, समझौता वादी नारी-पात्र हमारे सामने उपस्थित हुआ है।

5.1.2.8 माधुरी (तितली)

माधुरी 'तितली' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। वह जमींदार इन्द्रदेव की बहन है। उसका पति श्यामलाल अत्यंत व्याभिचारी इन्सान है। माधुरी अपने मायके में अपने पुत्र के साथ रहती है। माधुरी मायके की

जायदाद में हिस्सा चाहती है। अतः वह अपने भाई इन्द्रदेव के खिलाफ अनवरी और चौबे के साथ मिलकर योजना बनाती है। परिणामतः माधुरी पारिवारिक विघटन का मुख्य कारण बन जाती है। इसप्रकार माधुरी गौणपात्र रहते हुए इन्द्रदेव के चरित्र विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखती है।

5.1.2.9 राजकुमारी (तितली)

राजकुमारी 'तितली' उपन्यास का गौण नारी-पात्र है। वह मधुबन की विधवा बहन है। उन दोनों भाई-बहन का बड़ा स्नेहमयी नाता है। राजकुमारी चौबे के चक्कर में आकर तितली का विवाह इन्द्रदेव के साथ करना चाहती है। इसके लिए वह मधुबन-तितली के विवाह का विरोध करती है। विधवा राजकुमारी के मन में चौबे के प्रति आकर्षण निर्माण होता है। मधुबन राजकुमारी को चौबे की चंगुल से बाहर निकालता है। राजकुमारीपर, महंत जबर्दस्ती करने की कोशिश करता है; किन्तु मधुबन राजकुमारी को बजाता है। राजकुमारी अपना जीवन तितली की छत्रछाया में बिताती है।

राजकुमारी पात्र द्वारा प्रसाद ने विधवा नारी जीवन की समस्या को उद्घाटित करते हुए पुरुष-प्रधान समाज में नारी का शोषण कैसे होता है यह बतलाने का सफल प्रयास किया है।

5.1.2.10 नन्दरानी (तितली)

नन्दरानी 'तितली' उपन्यास का गौण पात्र है। वह मुकुन्दलाल की पत्नी है। मुकुन्दलाल कर्जे में डूबा हुआ इन्सान है। नन्दरानी बड़ी दक्षता के साथ अपनी गृहस्थी चलाती है। नन्दरानी निस्संतान है। नन्दरानी अपने मूँह बोले देवर इन्द्रदेव का ब्याह शैला से कराना चाहती है। नन्दरानी के ही देख-रेख में इन्द्रदेव-शैला का परिणय सम्पन्न होता है। नन्दरानी शैला को गृहस्थ्य-जीवन बिताने के लिए प्रवृत्त करती है। नन्दरानी एक संसार-दक्ष तथा पतिव्रता नारी है।

5.1.2.11 अनवरी (तितली)

अनवरी 'तितली' उपन्यास का गौण नारी पात्र है। अनवरी एक नर्स है। श्यामदुलारी के स्वास्थ्य की जिम्मेदारी अनवरी पर है। अनवरी इन्द्रदेव पर आसक्त है अतः वह इन्द्रदेव और शैला को हर समय दूर करने की कोशिश करती है। अनवरी माधुरी को इन्द्रदेव के खिलाफ भड़काकर परिवार में फूट डालने में सफल होती है। अनवरी माधुरी के पति श्यामलाल के संग कलकत्ता भाग जाती है। अनवरी एक स्वच्छन्द एवं उच्छृंख खलनायिका के रूप में चित्रित हुई है।

5.1.2.12 मलिया (तितली)

मलिया 'तितली' उपन्यास का गौण पात्र है। मलिया जन्म से अनाथ है। वह इन्द्रदेव की कोठी पर दासी का काम करती है। मलिया श्यामलाल द्वारा यौन-उत्पीड़न की शिकार होती है। वह अपने स्वाभिमान एवं शील की रक्षा के लिए सदैव जागृत रहती है। मलिया अपनी सुरक्षा के लिए मधुबन और तितली के आश्रय में चली जाती है।

5.1.2.13 उत्पला (इरावती)

उत्पला 'इरावती' उपन्यास का गौण पात्र है। उत्पला एक बौद्ध भिक्षुणी है। उत्पला को बौद्ध-विहार में भिक्षुणी-समुह की प्रवारणा की प्रतिनिधि के रूप में चुना गया है। उत्पला उपोसथागार में जाकर प्रवारणा करने के लिए उत्सुक थी। मगर इरावती के नृत्य करने के कारण भिक्षुणी-संघ की प्रवारणा स्थगित की जाती है। उत्पला अपने संघ को लेकर विहार में लौट जाती है।

5.1.2.14 मणिमाला (इरावती)

मणिमाला 'इरावती' उपन्यास की गौण पात्र है। मणिमाला श्रेष्ठी धनदत्त की धर्मपत्नी है। मणिमाला धनदत्त की दूसरी पत्नी है। मणिमाला निस्संतान थी; इसी कारण दोनों में वितुष्ट आ गया था। धनदत्त दो सालों से लापता था। मगध की युद्ध जन्य स्थिति के कारण मणिमाला अपने प्राण बचाने के लिए कोठी से निकलती है और अचानक उसकी भेंट धनदत्त से होती है। मणिमाला अत्यन्त सरल और भीरू स्वभाव की नारी है।

उपर्युक्त प्रमुख एवं गौण नारी पात्रों के अतिरिक्त कुछ ऐसे पात्र है, जिनका केवल नामोल्लेख मिलता है उदा. 'कंकाल' उपन्यास में अम्मा, कुटनी, चन्दा, लीली, श्रीमती प्रभादेवी, अम्बालिका, पिलोमी, रामा, बानी, शबनम, कुल्लु की माँ, बल्लो, चन्दलेखा, गोविन्दी चौबाइन आदि है। 'तितली' उपन्यास में रामदीन की नानी, मैना, मालती, जेन आदि तथा 'इरावती' उपन्यास में श्रामणेरी नीला, कामन्दकी, मालतीदेवी, आदि। साथ ही उत्सव आदि के प्रसंग से उपस्थित रहनेवाला विशाल नारी समुदाय, सेविकाएँ, सखियाँ, डोमनियाँ तथा भिक्षुणियों का संघ, राजगणिका, परिचारिकाएँ आदि सामान्य नारी पात्र है। ये सभी नारी-पात्र कथानक का एक अनिवार्य अंग है मगर कथा-धारा को मोड़ने की क्षमता इन पात्रों में नहीं हैं।

5.2 सामाजिक स्थिति की दृष्टि से नारी पात्र

व्यक्ति और समाज का आपस में अनन्य सम्बन्ध है। व्यक्ति द्वारा परिवार बनता है और अनेक परिवार मिलकर समाज की निर्मिति होती है। व्यक्ति ही समाज का निर्माता है। व्यक्ति में स्त्री-पुरुष के स्थान में पर्याप्त अंतर है। समाज द्वारा बनाए गए, रीति-नीति, विधि-नियम तथा कार्य-व्यापारों में पुरुष को अधिक स्वतंत्रता प्रदान की गई है तथा स्त्री को सदा ही दुय्यम रखा गया है। अपवादात्मक स्थिति में कुछ नारियों को अपने 'स्वत्व' का निर्माण करने का अवसर मिलता है। प्रसाद के उपन्यासों में नारी के इसी स्वरूप को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रकाशित किया गया है। प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों की नारियाँ सामाजिक जीवन में विविध स्तरों पर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रसाद के उपन्यासों में सामाजिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर निम्नलिखित प्रकार के नारी पात्र मिलते है - 1] पत्नी 2] प्रेमिका 3] माता 4] विधवा 5] वेश्या 6] अन्य रूपों में। इस वर्गीकरण के अंतर्गत नारी-पात्रों का विश्लेषण निम्नलिखित है -

5.2.1 पत्नी रूप में नारी

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नारी का 'पत्नी रूप' अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन काल से ही लक्ष्मी, पार्वती, आहिल्या आदि देवियों ने नारी के 'पत्नी-धर्म' का आदर्श हमारे सामने रखा है। संसार की हर एक नारी अपने 'पत्नी' रूप में आदर्श की स्थापना करना चाहती है। अपने पत्नी रूप में नारी हमेशा अपने परिवार के कल्याण में अपना जीवन बिताती है। वह अपने पति, सन्तान तथा परिवार के हर एक सदस्य के साथ-साथ समाज की और पर्याय से राष्ट्र की निर्हेतुक भाव से सेवा करती है।

प्रसाद ने नारी के इसी कल्याणकारी 'पत्नी-रूप' को उपन्यास में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। 'तितली' उपन्यास की 'तितली' आदर्श पत्नी-रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होती है। तितली अपने बालसखा मधुबन से प्रेम-विवाह करती है। तितली संपूर्ण रूप से पतिपरायणा नारी बनकर अपना जीवन बिताती है। मधुबन तितली को बिच रास्ते छोड़कर चला जाता है परन्तु मधुबन पर से उसका विश्वास बिल्कुल कम नहीं होता है। उसे अपने पती के बेगुनाह होने का पूरा यकिन है। वह शैला से कहती है - ''इसका तो कोई प्रश्न नहीं है। बहन शैला! संसार भर उनको चोर, हत्यारा और डाकू कहें; किन्तु मैं जानती हूँ कि वह ऐसे नहीं हो सकते। इसलिए मैं कभी उनसे घृणा नहीं कर सकती। मेरे जीवन का एक-एक कोना उनके लिए, उस स्नेह के लिए सन्तुष्ट है।''[2] इसप्रकार तितली मधुबन के विरह में चौदह साल गुजारती है। इन वर्षो में वह अपने परिवार के ही नहीं;

बल्कि किसान एवं अनाथ लोगों के कल्याण में अपना सर्वस्व लगाती है।

इसप्रकार प्रसाद ने तितली के माध्यम से एक आदर्श, पतिव्रता नारी का चित्रण किया है।

'तितली' उपन्यास की 'नन्दरानी' मुकुन्दलाल की पत्नी है। उन्हें कोई सन्तान नहीं है। नन्दरानी अपनी सारी आशा-आकाक्षाओं को परे रखकर मुकुन्दलाल की सेवा में जीवन बिताती है। नन्दरानी अपने पति मुकुन्दलाल की सच्ची सहधर्मिनी होने का प्रयत्न करती है। वह अपने पति की बिमारी की वजह से प्रायः चिंतित रहती है। मुकुन्दलाल मरने से पहले अपनी सारी जायदाद अपनी पत्नी के नाम करना चाहता है मगर नन्दरानी कहती है "...मैने उनका त्याग पत्र फाड़कर फेंक दिया और रजिस्ट्री कराने के लिए उन्हें नहीं जाने दिया। उनसे सब अधिकार लेकर मैं उनको अपदस्थ करके नहीं रखना चाहती। वे मेरे देवता हैं। उनकी बुराइयाँ तो मैं देख ही नहीं पाती हूँ।"[3] इस प्रकार नन्दरानी अपने पत्नी धर्म का पालन करती है।

प्रसाद ने 'नन्दरानी' के रूप में सहनशील एवं कर्तव्यपरायण पत्नी को प्रस्तुत किया है।

अतः प्रसाद ने अपने उपन्यास में एक ओर आदर्श नारी की स्थापना की है, तो एक ओर नारी के पतीत रूप - किशोरी (कंकाल), पति द्वारा त्यागी - माधुरी (तितली) तथा विरहिणी - मणिमाला (इरावती) आदि अन्य रूपों में नारी के पत्नी रूप का सजीव चित्रण किया है।

5.2.2 प्रेमिका रूप में नारी

संपूर्ण विश्व के साहित्य में नारी का 'प्रेमिका' रूप अत्यंत लोकप्रिय है। नारी प्रेम में अपना सर्वस्व अर्पित करती है। नारी अपने त्याग एवं तपस्या के बलपर प्रेम को महानता की चोटि तक पहुँचाती है। प्रसाद ने उपन्यासों में सामाजिक दृष्टि से नारी के प्रेमिका रूप को दो रूपों में प्रस्तुत किया है - 1] विवाहपूर्व प्रेमिका रूप 2] विवाहोत्तर प्रेमिका रूप। प्रसाद ने उपन्यासों में नारी को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है।

प्रसाद के 'कंकाल' उपन्यास की 'तारा' उच्चकोटि की प्रेमिका का उदाहरण है। वह विवाह से पूर्व अपने प्रेमी मंगल को अपना सर्वस्व अर्पण करती है, परंतु जिस दिन उन दोनों का विवाह होनेवाला होता है उसीदिन मंगल तारा को छोड़कर भाग जाता है। मंगल की बेवफाई से तारा आहत होती है। वह अपने गर्भ में पल रहे शिशु को जन्म देकर, आत्महत्या करने के लिए निकल पड़ती है। तारा अपने पवित्र प्रेम के बारे में कहती है - "मंगल! भगवान जानते होंगे कि तुम्हारी शय्या पवित्र है। कभी मैंने स्वप्न में भी तुम्हें छोड़कर इस जीवन में किसी से प्रेम नहीं किया, और न तो मैं कलुषित हुई। यह तुम्हारी प्रेम-भिखारिनी पैसे की भीख नहीं माँग सकती और न पैसे के लिए अपनी पवित्रता बेच सकती है।"[4] तारा अनेक बार खुद को मृत्यु के हाथ सौंप चुकी है मगर वह हर बार

बचाई जाती है। तारा की ओर विजय आकर्षित होता है, तब वह उसकी बहन बनी रहने में ही अपनी सार्थकता समझती है। मंगल उसकी जिंदगी में वापस आने की कोशिश करता है, मगर तारा उससे दूरी बनाए रखती है। तारा मंगल और गाला के विवाह पर भी आपत्ति नहीं जताती है। उसके जिंदगी में अनेक मोह के प्रसंग आते हैं; किन्तु वह अपने संयम में बँधी रहती है। तारा अपने जीवन का हर एक क्षण दूसरों की सेवा में अर्पित करती है। अतः इस उपन्यास में तारा त्यागमयी एवं कोमलहृदया प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुई है।

'तितली' उपन्यास की ग्रामबाला 'बन्जो' (तितली) आदर्श प्रेमिका के रूप में चित्रित हुई है। तितली अपने बालसखा मधुबन से प्रेम करती है। मधुबन के लिए वह जमींदार इन्द्रदेव के विवाह प्रस्ताव का विरोध करती है। तितली अपने प्यार के सामने इन्द्रदेव की धन-दौलत को ठोकर मारती है। रामनाथ भी तितली और मधुबन के प्रेम की गहराइयों को समझते हैं; वे स्वयं तितली और मधुबन का प्रेम-विवाह कराते है। तितली मधुबन के छोड़े जाने के बाद इसी प्रेम के बल पर पूरे संसार से मुकाबला करती है। उसे अपने प्रेमी मधुबन पर पूरा विश्वास है, वह शैला से कहती है - "बहन शैला ! संसार भर उनको, चोर, हत्यारा, और डाकू कहे; किन्तु मैं जानती हूँ कि वह ऐसे नहीं हो सकते। इसलिए मैं कभी उनसे घृणा नहीं कर सकती। मेरे जीवन का एक-एक कोना उनके लिए, उस स्नेह के लिए, सन्तुष्ट है।"[5] तितली के प्रेम में आत्मसंयम एवं त्याग की भावना है। इस प्रकार प्रसाद ने तितली के रूप में महान प्रेमिका का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

'इरावती' उपन्यास में 'इरावती' एक त्यागमयी प्रेमिका के रूप में चित्रित हुई है। इरावती सेनापती पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र से प्रेम करती है। परिस्थितिवश दोनों को अलग होना पड़ता है। इरावती अपने विफल प्रेम से आहत होकर महाकाल मंदिर की देवदासी बन जाती है। उस पर बृहस्पतिमित्र द्वारा विलासिता फैलाने का आरोप लगाकर उसे बौद्ध विहार में भेजा जाता है। अग्निमित्र इरावती को बंदी बनाने का विरोध करता है; परन्तु इरावती स्वयं बन्दी होकर विहार में चली जाती है। भिक्षु-विहार में इरावती को अग्निमित्र के साथ बिताए हुए पल याद आने लगते है - "इरा ! तुम व्याकुल न होना। मैं हूँ न ! तुमको चिन्ता किस बात की। किन्तु ...फिर न जाने क्या हुआ, कुछ ही दिनों में उसका आना-जाना बन्द हो गया। सुनने में आया कि वह घर से लड़कर परदेश चला गया। और मैं निरूपाय वहाँ से चल पड़ी। मुझे अवलन्ब था, इतना ही तो नहीं, उनकी आँखो से चुम्बक की-सी स्नेहमयी ज्वाला निकलती थी। वह विदिशा का कुलपुत्र था और मैं पंथ की भिखारिणी !"[6] इरावती सम्राट बृहस्पतिमित्र की प्रेम की याचिका को ठुकरा देती है। इरावती अंत तक अग्निमित्र की एकनिष्ठ प्रेमिका बनी रहती है।

प्रसाद के उपन्यासों में घण्टी, गाला, चन्दा, शैला, कालिन्दी आदि नारी पात्र भी प्रेमिका के रूप में

चित्रित हुए है। प्रसाद ने नारी के प्रेमिका रूप को सफलता से रखा है। प्रसाद की प्रेमिका नारी अपने प्रेमी पर सबकुछ लुटाने को तैयार है। प्रेम में असफल होते हुए भी वह अपनी ओर से पूर्णतः ईमानदार रहने का प्रयास करती है।

5.2.3 माता रूप में नारी

नारी का सर्वश्रेष्ठ पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण रूप है माता। माता रूप नारी जीवन को सार्थकता प्रदान करता है तथा नारी को परिपूर्ण बना देता है। माता की भूमिका दुहरी होती है - एक ओर संतान तो दूसरी ओर परिवार। माता संतान और परिवार दोनों के दायित्व का निर्वाह करती है। माता पति, पुत्र तथा परिवार के अन्य सदस्यों की मनःपूर्वक सेवा करती है। नारी का 'माता' रूप उसकी सबसे बड़ी साधना है। प्रसाद के उपन्यास में नारी के 'माता' रूप का यथार्थ चित्रण हुआ है। प्रसाद ने नारी की ममता को अपने उपन्यासों में तीव्रता से चित्रित किया है। प्रसाद के उपन्यासों में नारी का मातृ-रूप विभिन्न आयामों के साथ प्रस्तुत हुआ है।

'कंकाल' उपन्यास की 'किशोरी' अवैध माता है। किशोरी का पति श्रीचन्द उसे मातृत्त्व देने में असमर्थ था, इस लिए वह सन्तान प्राप्ति के लिए तीर्थस्थलों की यात्रा करता है। किशोरी को अपने बालसखा एवं मठाधिश निरंजन से 'विजय' की प्राप्ति हुई है। श्रीचन्द को किशोरी-निरंजन के अवैध रिश्ते के बारे में पता चलता है और इसी वजह से श्रीचन्द किशोरी को त्याग देता है। किशोरी पुत्र को पाकर पति को खो देती है। किशोरी के यहाँ निरंजन आता-जाता रहता है। श्रीचन्द व्यापार में हुई हानि की वजह से पुनः किशोरी के पास वापस लौटता है। किशोरी के पुत्र विजय को निरंजन और अपनी माता के अनैतिक रिश्ते के बारे में पता चलता है। विजय किशोरी से घृणा करने लगता है और उसे छोड़कर चला जाता है। किशोरी मोहन को दत्तक पुत्र बनाती है, मात्र उसके मातृत्त्व की क्षुधा शान्त नहीं होती। ''किशोरी सन्तुष्ट नहीं हो सकी। कुछ दिनों के लिए वह विजय को अवश्य भूल गई थी, पर मोहन को दत्तक ले लेने से उसको एकदम भूल जाना असम्भव था। हाँ, उसकी स्मृति और भी उज्ज्वल हो चली। घर के एक-एक कोने उसकी कृतियों से अंकित थे।''[7] इसप्रकार किशोरी विजय को भूल नहीं पाती है, इतना की वह जीवन के अंत में मृत्यु के समीप अपने पुत्र का चेहरा देखकर ही प्राण त्यागती है।

'तितली' उपन्यास में श्यामदुलारी का परंपरागत माता रूप प्रस्तुत हुआ है। अपने पुत्र इन्द्रदेव का विदेशी स्त्री के साथ रहना उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। शैला के कारण ही श्यामदुलारी और इन्द्रदेव के माँ-बेटे के रिश्ते में दरार आ गई थी। श्यामदुलारी की पुत्री माधुरी अपने पति के दुराचार से तंग आकर मायके रहने आई

थी। इसीकारण श्यामदुलारी को माधुरी के भविष्य की चिंता सदा सताती थी। श्यामदुलारी सोचती है - "हाँ मेरी बेटी का दुःख से भरा भविष्य है और उसके लिए मुझे कोई उपाय करना ही होगा। वह इस तरह न रह सकेगी। मैंने अपने नाम की जमींदारी माधुरी को देने का निश्चय कर लिया है।"[8] श्यामदुलारी के इस निर्णय से इन्द्रदेव जमींदारी छोड़कर चले जाते है और बॅरिस्टरी शुरू करते है। अंत में श्यामदुलारी शैला को अपनी बहू के रूप में स्वीकार करती है और इन्द्रदेव द्वारा ठुकराई हुई सम्पत्ति भी वापस कर देती है।

इसप्रकार श्यामदुलारी अपनी पारिवारिक समस्या में अंत तक उलझी हुई दिखाई देती है। उपन्यास में श्यामदुलारी का उदार मातृ-हृदय तथा उसके वात्सल्य भाव का पता चलता है। उपर्युक्त प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त प्रसाद के उपन्यासों में सरला, चाची, चन्दा, तितली आदि नारी पात्र माता रूप में चित्रित हुए है। प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित माताएँ अपने बच्चों की खुशी के लिए अंत तक छटपटाती हुई नजर आती है।

5.2.4 विधवा रूप में नारी

प्राचीन काल से ही विधवा नारी की सामाजिक स्थिति दयनीय थी। समाज नारी के वैधव्य को दुर्भाग्य समझकर उस पर अनेक प्रतिबन्ध लगाता है। विधवा का रंगीन वस्त्र पहनना, साज-सिंगार करना वर्ज्य होता है। विधवा स्त्री का परिवार में स्थान न के बराबर होता है तब समाज में क्या स्थान होगा ? आज भी एक विधवा नारी परिवार और समाज द्वारा दी गई मानसिक एवं शारीरिक यातनाओं को झेल रही है। प्रसाद ने अपने 'कंकाल', 'तितली' एवं 'इरावती' उपन्यासों में नारी के विधवा रूप का स्पष्ट-यथार्थ चित्रण किया है।

प्रसाद के 'कंकाल' उपन्यास की 'घण्टी' वृन्दावन की चंचल बाल-विधवा है। वह अपने शृंगारिक हाव-भावों से राहगिरों की वासना जगाती है। घण्टी अपनी अल्हडता की आड़ यौन तृप्ति का समर्थन करती है। उसे समाज का भय नहीं है। घण्टी विजय के साथ प्रेम-सम्बन्ध बनाती है। घण्टी को लज्जा कैसी होती है मालूम नहीं है। घण्टी कहती है - "मैं क्या जानूँ कि लज्जा किसे कहते हैं।"[9] घण्टी विजय के साथ स्वच्छन्दता से दिन गुजारती है। विजय के चले जाने के पश्चात् घण्टी बाथम के साथ रहने लगती है। विधवा घण्टी का जीवन मात्र एक समस्या बनकर रह जाता है।

प्रसाद के 'तितली' उपन्यास की 'राजकुमारी' मधुबन की विधवा बहन है। उसने अपने सम्पन्न ससुराल को छोड़कर अनाथ भाई मधुबन को सँभाला है। राजकुमारी चौबे के बातों में आकर अपने भाई के खिलाफ षड्यंत्र रचती है। राजकुमारी के जिंदगी में चौबे के आने के कारण उसमें जवानी की उमंगे जागृत होती है। उसे सज-धज ने की, रोली, कुकुंम, सिंदुर लगाने की इच्छा थी, परंतु "राजो ने यह अधिकार खो दिया था।"[10]

एक दिन सुखदेव चौबे उसकी असाह्यता का फायदा उठाने की कोशिश करता है परंतु मधुबन उसकी रक्षा करता है। महन्त के द्वारा भी राजकुमारी उत्पीड़ीत होती है। राजकुमारी अपना जीवन तितली और उसके बेटे मोहन की सेवा में बिताती है। इस प्रकार प्रसाद ने राजकुमारी के रूप में विवश, असहाय्य तथा वैधव्य से पीड़ित नारी को चित्रित किया है।

उपर्युक्त प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त प्रसाद के उपन्यासों में चाची, चन्दा तथा श्यामदुलारी आदि विधवा नारियों का चित्रण हुआ है। यह नारियाँ अपने वैधव्यपूर्ण जीवन में अनेक संकटों का सामना करती नजर आती है। तात्पर्य, प्रसाद के उपन्यासों में विधवा का समाज में स्थान, उसकी दीन-हीन अवस्था, पुरुष समाज द्वारा होनेवाले अत्याचार तथा परिस्थिति से जूझती विधवा नारी के दर्शन होते है।

5.2.5 वेश्या रूप में नारी

नारी का सबसे पतित रूप 'वेश्या' है। यह नारियाँ समाज की सबसे गम्भिर समस्या के रूप में उपस्थित हुई है। प्रसाद ने अपने उपन्यासों में वेश्या रूप की आंतरिक व्यथा को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। प्रसाद ने समाज में वेश्या-सुधार की माँग की है तथा उनके जीवन को उभारने का प्रयास किया है।

'कंकाल' उपन्यास की 'तारा' परिस्थितिवश वेश्या बनाई जाती है। तारा अपने पिता के साथ काशी में ग्रहण का स्नान करने आई थी। भीड़ में तारा अपने परिवार से बिछड़कर दुष्टों के चंगुल में फँस जाती है। 'तारा' को बनारस ले जाकर 'गुलेनार' वेश्या बनाया जाता है। जब की गुलेनार को वेश्यावृत्ति से नफरत थी। तारा अपनी विवशता को मंगल से कहती है - ''मेरा भगवान् जानता है कि कैसी कटती है! दुष्टों के चंगुल में पड़कर मेरा आहार-व्यवहार तो नष्ट हो चुका, केवल सर्वनाश होना बाकी है। उसमें कारण है अम्मा का लोभ। और मेरा कुछ आनेवालों से ऐसा व्यवहार भी होता है कि अभी वह जितना रूपया चाहती है, नहीं मिलता। बस इसी प्रकार बची जा रहा हूँ, परन्तु कितने दिन।''[11] मंगल द्वारा तारा की वेश्यालय से मुक्ति होती है; परंतु तारा के पिता उसका स्वीकार नहीं करते। तारा समाज की नजरों से बचने की कोशिश करती है। मंगल शादी के दिन तारा पर कुलशीलता का लांछन लगाकर उसे छोड़ जाता है। पूरी जिंदगी वह वेश्यापन का बोझ ढोती रहती है। इस प्रकार प्रसाद ने 'तारा' के माध्यम से परिस्थिति द्वारा पीड़ित, मजबूर, लाचार, असहाय्य वेश्या जीवन को चित्रित किया है।

'तितली' उपन्यास में 'मैना' वेश्या को चित्रित किया गया है। मैना शादी में नाचने, गाने का काम करती है। एक दिन ऐसे ही एक समारोह में मैना और मधुबन का परिचय होता है। मधुबन मैना को हाथी के पैरों से रौंदने

से बचाकर उसे शेरकोट लाता है। मैना चंचल तथा हँसमुख वेश्या है। मधुबन महन्त की हत्या कर मैना के आश्रय में जाता हैं। मैना सहारा देकर उसे भगाने में मदद करती है; किन्तु कुछ दिन बाद वही मैना उसके खिलाफ बयान देती है। मधुबन को तो अपने-आप पर विश्वास नहीं होता है - ''मैना ! वही तो बोल रही थी। वह वहाँ धन की प्यासी पिशाची उसका संकेत, उसकी सहृदयता, सब अभिनय ! रूपये पचा लेने की कारीगरी !''[12] इस प्रकार प्रसाद ने मैना के रूप में चंचल स्वार्थी तथा लोभी वृत्ति की वेश्या का चित्रण किया है।

प्रसाद ने वेश्या की तरह ही कुटनी, अम्मा, अनवरी आदि चरित्रहीन पात्रों को भी चित्रित किया है। उन्होंने अत्यंत सहजता से एवं बेबाकी से वेश्या रूप का चित्रण किया है, जो अत्यंत चातुर्य से औरों को फँसाती है और अपना स्वार्थ साध्य करती है।

5.2.6 अन्य नारी पात्र

प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' एवं 'इरावती' उपन्यासों में सामाजिक स्थिति की दृष्टि से नारी पात्रों का वर्गीकरण पत्नी, प्रेमिका, माता, विधवा तथा वेश्या रूप में प्रमुखता से चित्रित हुआ है। साथ ही इन उपन्यासों में नारी के अन्य रूपों का भी सफलता से चित्रण हुआ है। इन में कन्या-रूप में तारा, घण्टी, गाला तथा माधुरी का चित्रण हुआ है। बहन-रूप में माधुरी तथा राजकुमारी का सफल चित्रांकन हुआ है। दासी रूप में मलिया, यमुना, इरावती आदि स्त्री-पात्रों का चित्रण हुआ है। संन्यासिनी रूप में उमा, उत्पला का सफल चित्रण हुआ है। भाभी-रूप में नन्दरानी का रोचक चित्रण हुआ है तथा शिष्या रूप में शैला और तितली का चित्रण हुआ है।

प्रसाद ने अपने उपन्यासों में नारी को ईकाई मानकर उसका सामाजिक स्थिति के संदर्भ में अनेक रूपों से चित्रण किया है।

5.3 वैचारिक दृष्टि से नारी पात्र

देश में स्वाधिनता प्राप्ति के उपरांत वैचारिक क्रान्ति की लहर उठी। इस आंदोलन में पाश्चात्य संस्कृति का भारतीय वैचारिक चेतना पर गहरा असर हुआ है। विशेषतः नारी के विचारों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। नारी स्वतंत्रता आंदोलन से नारी की वैचारिक लड़ाई शुरू हुई है। उसका कार्य क्षेत्र केवल चार दिवारी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह अपने अस्तित्व की खोज में बाह्य जगत में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाए कार्य कर रही है। प्रसाद ने अपने 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में नारी के वैचारिक परिवर्तन का चित्रण किया है। जिसे निम्नलिखित आयामों में रेखांकित किया जा सकता है -

1] परंपरावादी नारी और

2] विद्रोही नारी

अतः इनका विश्लेषण इस प्रकार है -

5.3.1 परंपरावादी नारी

परिवर्तनों के परिणामस्वरूप मानव की वैचारिक शक्ति में बदलाव आया जिसके परिणाम स्वरूप उसकी जीवन शैली में भी काफी परिवर्तन हुआ। फिर भी परंपरागत विचारों का अपना महत्त्व बना ही रहा। आधुनिकता के परिणामस्वरूप इन विचारों में परिवर्तन अवश्य आया। मानव की आस्था दिन-ब-दिन कम होने लगी, फिर भी भारतीय संस्कृति की महत्ता की वजह से मूल्य और आदर्श का अपना स्थान बना रहा; परंतु इन बदलते आधुनिक विचारों में भी परंपरागत विचार अब भी महत्त्वपूर्ण माने जाते है। भले ही आधुनिक विचारधारा के प्रभाव से प्राचीन परंपरागत विचारधारा में आस्था कम हुई है। ये परम्परागत विचार भारत के प्राचीन काल से चले आ रहे मूल्य एवं आदर्श है। नारी इन परम्पराओं का निर्वाह पूरी जिंदगी भर करती है। ''परंपरा का अर्थ व्यक्तियों की उन सभी आदतों, विचारों, प्रथाओं, कानुन, कहानी और किवदंती के योग से है, जो मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है। इन परम्पराओं के प्रति व्यक्ति को विशेष लगाव होता है। व्यक्ति इनमें मोह में बँधा हुआ होता है। इस तरह प्रत्येक समाज की अपनी परम्पराएँ होती है।''[13]

विवेच्य उपन्यासों में नारी के विविध रूपों में परंपरागत विचारधारा का निर्वाह करनेवाले नारी चरित्रों का चित्रण सहज परिलक्षित होता है।

5.3.1.1 तितली

प्रसाद के 'तितली' उपन्यास की 'तितली' बाबा रामनाथ की पोषिता कन्या है। तितली अपने बालसखा मधुबन से प्रेम करती है। तितली में अभिजात्य वंश का गर्वपूर्ण संस्कार प्रवाहित है। सबके विरोध के बावजूद तितली मधुबन के साथ विवाह करती है। गाँव में मधुबन और तितली की सफल गृहस्थी सबके लिए कुतूहल का विषय बन जाता है। बाबा रामनाथ की शिक्षा-दीक्षा से तितली के जीवन की साधना को साकार रूप मिला है। तितली इन संस्कारों के साथ ही सदा आचरण करती है। मधुबन महंत की हत्या करके तितली को बिना कहे-बताए कलकत्ता भाग जाता है। मधुबन के जाने के पश्चात् तितली अपने गहने बेचकर बनजरिया को बचाती है। वह अपने मन को समझाती है कि मधुबन के वापस लौटने तक उसे जीना होगा और अपने होने वाले बच्चे की रक्षा करनी होगा।

तितली दृढ़ता के साथ कन्या-पाठशाला चलाती है। तितली इस भीषण संसार से लड़कर अपना अस्तित्व बनाने में सफल हुई है। तितली अपने बूरे समय में भी शैला तथा इन्द्रदेव की मदद को नहीं स्वीकारती। तितली बीना किसी सहाय्यता के स्वाभिमानपूर्वक चौदह साल बिताती है। शैला भी तितली के इस पतिपरायण वृत्ति पर आश्चर्य प्रकट करती है। इतने सालों बाद भी तितली मधुबन को भूला नहीं सकी है।

तितली खेती करके पाठशाला चलाती है। तितली ने राजो, मलिया, रामजस के साथ-साथ अनाथ लड़कियों को भी अपने परिवार में शामिल कर लिया है। तितली अपने साहस और धैर्य के साथ मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करके हुए समाज सेवा में डूब जाती है। तितली अपने पति की आत्मा से जूड़ी हुई है, इसलिए उसके न रहने पर भी उसके होने की भावना पर जीवन बिताना केवल भारतीय नारी के बस की बात है। तितली पति का वियोग सहकर अपनी आजीविका चलाती है और दूसरों को भी अबलम्ब देती है।

भारतीय नारी जीवन में सिर्फ एक बार ही आत्म-समर्पण करती है और संपूर्ण जीवन उसी की तपस्या करती है। तितली ने भी मधुबन को अपना सर्वस्व माना और उसकी स्मृतियों में 14 वर्ष व्यतीत किए है। तितली का पुत्र मोहन अपनी माता के चरित्र पर संदेह करता है। तितली के मातृत्व को यह बात असहनिय हो जाती है - "...ओह, सम्भव है, यह मेरे जीवन का पुण्य मुझे ही पापिनी और कलंकिनी समझता हो तो क्या आश्चर्य। मैंने इतने धैर्य से इसीलिए संसार का सब अत्याचार सहा कि एक दिन वह आवेंगे, और मैं उनकी थाती उन्हे सौंपकर अपने दुःखपूर्ण जीवन से विश्राम लूँगी।"[14] इसप्रकार तितली का मातृवत्सल रूप भी परंपरागत भारतीय नारी का आदर्श है। मधुबन के चौदह साल बाद लौट आने से उसकी तपस्या सफल हो जाती है।

प्रसाद ने तितली के चरित्र निर्माण में आदर्श को कूट-कूट कर भरा है। तितली अपने कन्या, पत्नी तथा मातृ-रूप में परंपरागत भारतीय संस्कारों का निर्वाह करती है। अतः तितली एक दैवी आलोक से प्रकाशित आदर्श व्यक्तित्व है। वह आदर्श पत्नी है, वैसे ही आदर्श माता, गृहिणी और रमणी भी है।

5.3.1.2 **श्यामदुलारी**

प्रसाद के 'तितली' उपन्यास की 'श्यामदुलारी' परंपरावादी स्त्री है। श्यामदुलारी अपनी कुलप्रतिष्ठा एवं बाह्य सम्मान के प्रति विशेष सतर्क है। श्यामदुलारी रूढ़िग्रस्त नारी है। वह कट्टर हिन्दू महिला है, छुआछुत पर उसका विश्वास है। इन्द्रदेव का शैला के साथ रहना उसे पसन्द नहीं है। शैला के पैर छूने पर वह स्नान करती है क्योंकि शैला विदेशी एवं विजातीय है।

श्यामदुलारी वात्सल्य की मूर्ति है। अपने पुत्र इन्द्रदेव एवं माधुरी के सुखमय भविष्य के लिए प्रयत्नरत

है। इन्द्रदेव पर नाराज होने के बावजूद भी श्यामदुलारी के मन में उसके प्रति ममता की उत्कट लालसा है। श्यामदुलारी माधुरी के पारिवारिक स्थिति को देखकर अपनी जायदाद उसके नाम करने का निर्णय लेती है। सन्तानों के प्रति श्यामदुलारी का स्नेह असीम है। श्यामदुलारी अपनी पुत्रवधू शैला को अपने स्नेह से आत्मीय बना लेती है और आशीर्वाद के रूप में जायदाद भेंट रूप में देती है। श्यामदुलारी अपनी पुत्र-वधू शैला के लिए मोतियों के हार, हीरों की चूड़ियाँ देकर उसका स्वागत करती है।

इस प्रकार प्रसाद ने श्यामदुलारी के रूप में परम्परागत भारतीय नारी को प्रस्तुत किया है। श्यामदुलारी ने अपने माता-रूप में आदर्श का निर्माण किया है। प्रसाद ने श्यामदुलारी को आदर्श माता के रूप में चित्रित किया है।

5.3.1.3 **नन्दरानी**

'तितली' उपन्यास में 'नन्दरानी' परंपरागत आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित हुई है। नन्दरानी मुकुन्दलाल की पत्नी है। नन्दरानी पति-परायण नारी है। उसे सन्तान नहीं है। नन्दरानी बहुत चतुराई से गृहस्थी चलाती है। मुकुन्दलाल अपनी सम्पति नन्दरानी के नाम करना चाहता है। अपने पति के इस निर्णय के कारण नन्दरानी व्याकुल हो उठती है। नन्दरानी को मुकुन्दलाल के सेहत की चिंता खाई जा रही है।

नन्दरानी मुकन्दलाल द्वारा बनाया गया त्यागपत्र फाड़कर फेंकती है। वह मुकुन्दलाल के बारे में कहती है - ''उनसे सब अधिकार लेकर मैं उनको अपदस्थ करके नहीं रखना चाहती। वे मेरे देवता हैं। उनकी बुराइयाँ तो मैं देख नहीं पाती हूँ। हाँ, अर्थ-संकट है सही, पर यही उनकी मनुष्यता है।''[15] नन्दरानी संकटकालीन स्थिति में गृहस्थी की पूरी जिम्मेदारी अपने उपर लेती है।

नन्दरानी इन्द्रदेव और शैला का विवाह करना चाहती है। नन्दरानी शैली को विवाह की आवश्यकता के बारे में कहती है कि - ''मैं कहती हूँ कि पुरुष और स्त्री को ब्याह करना ही चाहिए। एक-दूसरे के सुखःदुःख और अभाव-आपदाओं को प्रसन्नता में बदलने के लिए सदैव-प्रयत्न करता रहे। एक की कमी दूसरे को पूरी करनी चाहिए। इसीलिए तुम दोनों को मैं एक में बाँध देना चाहती हूँ।''[16] नन्दरानी के इन विचारों से वह परंपरावादी नारी सिद्ध होती है।

इन्द्रदेव और शैली के विवाहोपरांत नन्दरानी शैला को उसके कर्तव्यों के प्रति जागृत करते हुए फटकारती है - ''तुम दूसरों की सेवा करने के लिए इतनी उत्सुक हो, किन्तु अपने घर का भी कुछ ध्यान है ? ... यदि नहीं, तो मैं उसे तुम्हारा सौभाग्य कैसे कहूँ ? मैं तो जानती हूँ कि स्त्री, स्त्री ही रहेगी। कठिन पीड़ा से उद्विग्न होकर आज

का स्त्री-समाज जो करने जा रहा है ,वह क्या वास्तविक है ?''[17] नन्दरानी शैला को अपने सास की तरफ भी ध्यान देने की सलाह देती है।

प्रसाद ने नन्दरानी के रूप में एक परम्परागत आदर्श मूल्यों को व्यक्त किया है। नन्दरानी एक आदर्श पत्नी एवं आदर्श गृहिणी है। नन्दरानी हिन्दू-संस्कृति की रक्षिका के रूप में चित्रित हुई है।

निष्कर्ष यह है कि विवेच्य उपन्यासों में प्रसाद ने परंपरावादि नारी का चित्रण सफलता से किया है। ये नारियाँ जीवन के हर मोड़ पर अपने परम्परागत मूल्यों को नहीं भूलती; बल्कि जीवन के अंतिम क्षण तक उन तत्वों को बनाए रखती है और अपना आदर्श प्रस्तुत करती है।

5.3.2 विद्रोही नारी

आधुनिक युग में नारी अपने अस्तित्व के प्रति अत्यंत सजग हो गई है। इन नारियों ने परंपरागत मूल्यों एवं आदर्शों को ठूकरा दिया है। यह नारियाँ विद्रोही विचारधारा में आस्था रखती है। यह नारियाँ घर, परिवार, समाज के प्रति विद्रोह प्रकट करती है। उसके विचारधारा में परंपरा का निर्वाह करना मतलब बन्धनों में रहना हो गया है। इन नारियों को अपनी स्वतंत्रता प्रिय होती है। ये नारियाँ अपने उपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार के विरोध में विद्रोह करती है।

प्रसाद के उपन्यासों में प्राप्त नारी के विविध रूपों में विद्रोही नारी का रूप भी परिलक्षित होता है। प्रसाद ने अपने उपन्यास में विद्रोही व्यक्तित्व की नारियों का सफल चित्रण किया है।

5.3.2.1 घण्टी

'कंकाल' उपन्यास की 'घण्टी' विद्रोही विचारधारा की समर्थक है। घण्टी ब्रज की बाल-विधवा है। घण्टी विधवा होने के बावजूद अत्यंत स्वैर तथा स्वच्छंद आचरण से लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करती है। विजय को भी घण्टी ने अपने मोहपाश में जकड़ दिया है। वह अपने वर्तन से समाज के किसी भी निति-नियमों का पालन नहीं करती है। घण्टी विजय के साथ अत्यंत स्वच्छन्दता से विहार करती है।

घण्टी अपने पति के बारे में कुछ नहीं जानती है, क्योंकि वह बाल विधवा है। वह अपने मन में उठे यौन भाव की तृप्ति के लिए राह-गिरों से हँसी-मजाक करती है। घण्टी विजय के साथ कई दिनों तक रहती है। घण्टी विधवा होते हुए भी विजय से प्यार करती है और उससे शादी करना चाहती है। वह विजय से कहती है ''हिन्दू स्त्रियों का समाज ही कैसा है, उसमें कुछ अधिकार हो तब तो उसके लिये कुछ सोचना-विचारना चाहिए। और

जहाँ अन्ध-अनुसरण करने का आदेश है, वहाँ प्राकृतिक, स्त्री-जनोचित प्यार कर लेने का जो हमारा नैसर्गिक अधिकार है - जैसा कि घटनावश प्रायः स्त्रियाँ किया करती हैं - उसे क्यों छोड़ दूँ।''[18] घण्टी संसार के किसी भी बन्धन में बन्धने को तैय्यार नहीं है, वह विजय से कहती है कि - ''विजय ! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। तुम ब्याह करके यदि उसका प्रतिदान चाहते हो, तो भी कोई चिन्ता नहीं। यह विचार तो मुझे कभी सताता नहीं। मुझे जो करना है, वही करती हूँ, करूँगी भी।''[19] विजय का घण्टी के जीवन से चले जाने के पश्चात् घण्टी बाथम के साथ रहती है और ईसाई धर्म की दीक्षा लेती है। घण्टी अपने इस स्वैर आचरण के कारण एक दिन मनोरूग्ण बनती है।

प्रसाद ने 'घण्टी' के माध्यम से बाल-विधवा नारी का विद्रोह प्रस्तुत किया है। घण्टी विधवा होकर भी समाज के किसी भी नियम को नहीं मानती; बल्कि सारा जीवन स्वैर आचरण करती है।

5.3.2.2 गाला

'कंकाल' उपन्यास में 'गाला' विद्रोही नारी के रूप में चित्रित हुई है। गाला के शरीर में मुगल वंश का रक्त प्रवाहित है। गाला डाकू बदन गूजर की बेटी है। गाला आधुनिक विचारोंवाली नारी है। गाला नये (विजय) के प्रति आकर्षित होती है; परन्तु नये के इन्कार से उसका स्वाभिमान जागृत होता है। नये द्‌वारा किए गए अपमान से गाला का स्त्रीत्व जागृत होता है। वह अपने पिता से कहती है - ''आप मुझे अपमानित कर रहे है, मैं अपने यहाँ पले हुए मनुष्य से कभी ब्याह न करूँगी। यह तो क्या, मैंने अभी ब्याह करने का विचार भी नहीं किया है ! मेरा उद्‌देश्य है - पढ़ना और पढ़ाना। मैं निश्चय कर चुकी हूँ कि मैं किसी बालिका-विद्यालय में पढ़ाऊँगी।''[20] गाला नए विचारों वाली स्त्री है। वह अपने मन के विचार अपने पिता के सम्मुख बड़ी स्पष्टता से रखती है।

गाला मंगल के साथ पाठशाला चलाती है। प्रायः उन दोनों में वाद-विवाह होते रहते है। गाला मंगल के सामने अपने विचारों को बेबाकी से रखती है। गाला 'नारी जीवन' के बारे में कहती है कि - ''नारी जाति का निर्माण विधाता की एक झूंझलाहट है।''[21]

गाला नये को भूलकर मंगल का वरण करती है और उसके साथ प्रेम-विवाह करती है।

प्रसाद ने 'गाला' के रूप में एक विद्रोही नारी को प्रस्तुत किया है, जो स्पष्ट, आधुनिक विचारोंवाली स्वाभिमानी नारी व्यक्तित्व को स्पष्ट न्याय देती है।

5.3.2.3 कालिन्दी

'इरावती' उपन्यास में 'कालिन्दी' को विद्रोही नारी रूप में चित्रित किया गया है। कालिन्दी मगध के सम्राट नन्दराज की वंशज है। कालिन्दी को मौर्य सम्राट शतधनुष बन्दी बनाकर अंतःपुर में लाते है। इस घटना से कालिन्दी का नारी मन अपमान और प्रतिशोध की ज्वाला में जलने लगता है। कालिन्दी बदले की भावना व्यक्त करते हुए कहती है - "मौर्यो ने नन्दों का विनाश किया था। मैं मौर्यो का विनाश करूँगी।"[22]

कालिन्दी अपने इस षड्यंत्र को सफल बनाने में सेनापति पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र को शामिल करती है। कालिन्दी यह जानकर भी अग्निमित्र के प्रति आसक्त होती है कि अग्निमित्र इरावती से बहुत प्यार करता है। कालिन्दी अग्निमित्र के सामने अपने प्रेम को व्यक्त करते हुए कहती है - "मैं अपने हृदय से हारी हूँ। मैं राजप्रेयसी ! राजनन्दिनी !अनुग्रह की क्षमता खो नहीं सकी हूँ। अग्नि ! लो मैं अपना बहुमूल्य प्रणय तुम्हें दान करती हूँ।"[23] कालिन्दी अत्यंत स्पष्टता से अपने मन में उठे प्रेम-भाव को व्यक्त करती है।

कालिन्दी ने मौर्यों के प्रतिशोध के लिए 'स्वस्तिक दल' का निर्माण किया है। कालिन्दी इस योजना को सफल बनाने के लिए कभी परिचारिका, कभी गुप्तचर, कभी बन्दिनी, तो कभी रानी का वेश बनाती है। अंत में, कालिन्दी कलिंग सम्राट खारवेल को भी अपने इस युद्ध में शामिल करने में सफल होती है।

प्रसाद ने कालिन्दी के माध्यम से एक शूर, वीर तथा साहसोचित विद्रोही नारी का चित्रण किया है। कालिन्दी अपने उपर हुए अन्याय का बदला लेने की उत्तेजना से विद्रोही बन जाती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' एवं 'इरावती' उपन्यासों में वैचारिक दृष्टि से नारी पात्र परंपरावादी एवं विद्रोही रूप में प्रस्तुत हुए है। प्रसाद ने इन विचारधाराओं के माध्यम से प्राचीन एवं आधुनिक विचारधारा का समन्वय अपने उपन्यासों में किया है। इन उपन्यासों में नारी का परंपरावादी एवं विद्रोही रूप अत्यंत रोचकता से प्रस्तुत हुआ है। तात्पर्य, प्रसाद ने सांस्कृतिक समन्वय प्रस्थापित करने का प्रयास किया है।

5.4 *मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से नारी पात्र*

मनुष्य के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए उसके मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक होता है। मानवी मन समस्त इन्द्रियों और ज्ञानेद्रियों तथा शरीर को नियंत्रित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। मनुष्य का व्यवहार उसके शारीरिक एवं मानसिक भावों से परिलक्षित होता है। मानव के इसी स्वभाव का विश्लेषण 'मनोविज्ञान' में किया जाता है। मनोविज्ञान में मानवी मनो-व्यापारों का अध्ययन किया जाता है।

मानवी व्यक्तित्व के हर सूक्ष्म से सूक्ष्म परतों को खोलने का प्रयास मनोविज्ञान की परिधि में होता है।

व्यक्ति भिन्न परिस्थिति तथा वातावरण में भिन्न प्रकार का व्यवहार करता है। व्यक्ति द्वारा किए जानेवाले आचरण को सामान्य और असामान्य की कोटि में रखा जाता है। मनुष्य के इस सामान्य और असामान्य वर्तन को, निश्चित रूप से व्याख्यायित करना संभव नहीं है। हर व्यक्ति को सामाजिक मूल्य, सभ्यता, परिवेश तथा मानसिक एवं शारीरिक स्थिति प्रभावित करती है और इन्हीं बातों के कारण व्यक्ति का व्यवहार सामान्य एवं असामान्य होता है।

व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले सामान्य व्यवहार पर विभिन्न बातों का प्रभाव होता है। ''जीवन में आत्म निर्देश, साधारण कार्यक्षमता और सफलता, आस-पास के लोगों के साथ मिलजुल कर कार्य करना, कठिनाइयों और संघर्षों को समझकर स्वीकार कर उनके निवारणार्थ प्रयत्नशील रहना, नैतिक मान्यताओं, सामाजिक परम्पराओं और व्यवस्थाओं का निर्वाह, सुरक्षा, सन्तोष तथा सुख, कुण्ठाओं के प्रति आशाभाव, आत्म संयम, अपने विचारों, इच्छाओं और कार्यों पर अनुशासन रखना तथा देश काल, परम्परा तथा परिस्थितियों की माँग के अनुसार स्वयं ढल जाना या परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेना या ढाल लेना, ये सब सामान्यता के लक्षण हैं।''[24]

इसी प्रकार व्यक्ति के असामान्य व्यवहार के लिए उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति अवलंबित होती है। मनुष्य की शारीरिक स्थिति अगर अस्वस्थ, व्याधिग्रस्त या शारीरिक विकास अपूर्ण होगा; मनुष्य का व्यवहार असामान्य होगा। साथ ही वह अस्वस्थ, मनोरोगी, मानसिक दौर्बल्य या अपूर्ण बौद्धिक विकास से पीड़ित है; तो उसका वर्तन असामान्य ही होगा। ''मनोविज्ञान में, मनोरोगी, असामाजिक या समाज-विरोधी व्यक्तियों, हीन बुद्धि तथा चारित्रिक दोषों से युक्त व्यक्तियों को भी असामान्य (एब्नार्मल) माना गया है। बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ व्यक्ति भी प्रायः सामान्य कहे जाने वाले व्यक्तियों के साथ तथा सभी सामाजिक मान्यताओं के साथ संतुलन स्थापित कर सकने में असफल होते हैं। मनोविज्ञान में इस तरह के व्यक्ति को एक अलग वर्ग-श्रेष्ठ या परा-सामान्य (सुपीरियर या सुपरनार्मल) कोटि में रखा गया है।''[25]

मनोविज्ञान ने साहित्य को सबसे अधिक प्रभावित किया है। साहित्य में मनोविज्ञान की मदद से मानवी चित्रण में अधिक सजीवता एवं स्पष्टता आई है। साहित्य के उपन्यास विधा में मनोविज्ञान के आगमन से जान आ गई है। जिसके कारण उपन्यास में पात्रों की मानसिक एवं बौद्धिक स्थिति को व्याख्यायित करना आसान हो गया है।

उपन्यासकार जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों के नारी पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिकता की कसौटी

पर खरा उतरा है। पात्र चरित्र-चित्रण के अंतर्गत नारी-पात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्ष का विशद विवेचन किया है। नारी का मनोविश्लेषण करना अत्यंत जटिल कार्य है। प्रसाद ने उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता के आधार पर नारी-स्वभाव का सामान्य एवं असामान्य रूप से चित्रण हुआ है। प्रसाद ने अपने उपन्यासों में नारी के मनोजगत को अभिव्यक्त किया है। प्रसाद के उपन्यासों में मनोविज्ञानिकता की दृष्टि से नारी-पात्रों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है -

1] सामान्य नारी

2] असामान्य नारी

प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में प्रयुक्त नारी-पात्रों का मनोवैज्ञानिक रूप से वर्गीकरण इस प्रकार हुआ है -

5.4.1 **सामान्य नारी**

जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यास में सामान्य मनोवैज्ञानिकता वाले नारी पात्रों का चित्रण मिलता है। यह नारी पात्र परिस्थिति के अनुसार खुद को ढाल देते है। इस कारण यह पात्र मानसिक दृष्टि से संतुलित होते है। प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' तथा 'इरावती' उपन्यास में सामान्य नारी पात्रों का विश्लेषण इस प्रकार मिलता है -

5.4.1.1 **श्यामदुलारी**

प्रसाद के 'तितली' उपन्यास की 'श्यामदुलारी' विधवा जमींदारीन है। श्यामदुलारी अपने बेटे इन्द्रदेव और शैला के रिश्ते को लेकर चिंतित है; क्योंकि शैला विदेशी नारी हैं। शैला अपने परंपरागत धर्म-जाति के बन्धनों में कैद है। शैला अपना ज्यादातर समय पूजा-पाठ में बिताती है। उसकी पुत्री माधुरी अपने पति के व्यभिचारी आचरण से तंग आकर मायके चली आई है। श्यामदुलारी माधुरी के जीवन में स्थैर्य लाना चाहता है किंतु जायदाद के झगड़े की वजह से वह कुछ कर नहीं पाती अब उसके बसमें कुछ भी नहीं हैं। फिर भी बेटी के मोह के कारण उससे पुत्र दूर हो जाता है। इसी दौरान इन झंझटों से तंग आकर इन्द्रदेव घर-जायदाद दोनों छोड़कर कलकत्ता चला जाता है। इन सारी पारिवारिक परिस्थिति से घिरी श्यामदुलारी अपनी विवशता शैला के सामने व्यक्त करते हुए कहती है - ''मिस शैला, मेरी सारी आशाओं पर भी तो पाला पड़ गया। दोनों लड़के बेकहे हो रहे हैं। हम लोग स्त्री हैं। अबला हैं। आज वह जीते होते तो दो-दो थप्पड़ लगाकर सीधा कर देते। पर हम लोगों

के पास कोई अधिकार नहीं। संसार तो रूपये-पैसे के अधिकार को मानता है। स्त्रियों के स्नेह का अधिकार, रोने-दुलारने का अधिकार, तो मान लेने की वस्तु है न ?''[26] श्यामदुलारी इन्द्रदेव और शैला के विवाह के विरोध को मन में ही दबाए रखती है और प्रत्यक्ष में उनके विवाहोपरांत आशिर्वाद देने के सिवाय उसके पास कोई पर्याय नहीं रहता। श्यामदुलारी अपनी पूरी जिंदगी जमींदारीन होते हुए भी विवशता से बिताती है। वह बहुत कुछ चाहकर भी प्रत्यक्ष में कुछ नहीं कर पाती। उसने अपनी जिंदगी में आई कठिनाईयों के अनुरूप स्वयं को ढाल लिया है। तात्पर्य 'तितली' उपन्यास की 'श्यामदुलारी' अपने पारिवारिक समस्या में फँसी सामान्य नारी है।

5.4.1.2 **माधुरी**

'तितली' उपन्यास की 'माधुरी' परित्यक्ता नारी है। माधुरी अपने बेटे के साथ अपने मायके में रहती है। माधुरी का पति श्यामलाल एक व्यभिचारी इन्सान है। माधुरी अपने भविष्य के प्रति चिंतित है इसलिए वह अपने भाई इन्द्रदेव को अपनी माता श्यामदुलारी से अलग करने का प्रयत्न करती है। अनवरी और चौबे के साथ मिलकर माधुरी अपने भाई इन्द्रदेव के खिलाफ षड्यंत्र रचती है। इसके लिए वह इन्द्रदेव और शैला के विवाह का विरोध करती है। इन्हीं कारणों से उसका पूरा परिवार बिखर जाता है। माधुरी सम्मिलित परिवार को अलग करने का कारण बन जाती है। माधुरी श्यामदुलारी को जायदाद अपने नाम पर लिखवाने के लिए प्रवृत्त करती है। वास्तव में ''माधुरी के जीवन में प्रेम नहीं, सरलता नहीं, स्निग्धता भी उतनी न थी। स्त्री के लिए जिस कोमल स्पर्श की अत्यन्त आवश्यकता होती है, वह श्यामलाल से कभी मिला नहीं। तो भी मन को किस तरह संतोष चाहिए। पिता के घर का अधिकार ही उसके लिए मन बहलाने का खिलौना था। वह भी जानती थी कि यह वास्तविक नहीं, तो भी जब कुछ नहीं मिलता तो मानव-हृदय कृत्रिम को ही वास्तविक बनाने की चेष्टा करता है। माधुरी भी अब तक यही कर रही थी।''[27] माधुरी को परिस्थितियों ने इन्द्रदेव का विरोधी बनाया था। माधुरी का पति श्यामलाल अनवरी को लेकर भाग जाता है, माता श्यामदुलारी भी मृत्यु के नजदिक जा रही थी। इस संसार में वह अकेली ही रह जाएगी, यह सोचकर माधुरी शैला को अपनी भाभी के रूप में स्वीकार करती है और अपने भविष्य की व्यवस्था करती है।

'तितली' उपन्यास की 'माधुरी' एक सामान्य नारी के रूप में चित्रित हुई है; जिसमें सर्वसामान्य नारी के गुणदोष सहज दिखाई देते है।

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

5.4.1.3 राजकुमारी

'तितली' उपन्यास की 'राजकुमारी' मधुबन की विधवा बहन है। विधवा जीवन की व्यथा राजकुमारी के चरित्र में सहज दिखाई देती है। वह जीवन में दुख दर्द सहती है। राजकुमारी अपने अनाथ भाई मधुबन की सेवा के लिए मायके आई थी। राजकुमारी शेरकोट और मधुबन का खयाल रखती थी। वह अपने विधवा जीवन से उब चूकी थी। राजकुमारी की जिंदगी में चौबे का आगमन होता है; जिसके कारण उसकी उमंगे बढ़ गई थी, परंतु यही चौबे उसकी असहायता का फायदा उठाकर उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश करता है। इस प्रसंग के बाद से राजकुमारी मधुबन के मन से उतर जाती है। राजकुमारी महंत की वासना का शिकार होते-होते बच जाती है। इसी कारण मधुबन मंहत की हत्या करके भाग जाता है। राजकुमारी अपने जीवन में आई आपत्तियों के बारे में सोचती है - ''मैं ही इन सब उपद्रवों की जड़ हूँ। न जाने किस बुरी घड़ी में, मेरे सीधे-सादे हृदय में, संसार की अप्राप्त सुख-लालसा जाग उठी थी, जिससे मेरे सुशील मधुबन के ऊपर यह विपत्ति आई। तितली भी चली गई। उसका भी कुछ पता नहीं। सुना है कि कल तक लगान का रूपया न जमा हो जायगा, तो बनजरिया भी हम लोगों को छोड़ना पड़ेगा। हे भगवान !''[28] राजकुमारी अपने परिवार पर आई इन परिस्थितियों के लिए खुद को जिम्मेदार मानती है और इसी अपराधबोध में जीती है।

इस प्रकार प्रसाद ने 'राजकुमारी' के रूप में वैधव्य की विवशता में जीती सामान्य नारी का चित्रण किया है।

प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में चित्रित सामान्य नारी पात्र परिस्थिति के कुचक्र में फँसकर विवश जीवन व्यतीत करने पर बाध्य होता है, यह बताया है।

5.4.2 असामान्य नारी

जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में अधिकतर नारी पात्र असामान्य नजर आते है। इन नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस प्रकार है -

5.4.2.1 लतिका

प्रसाद के 'कंकाल' उपन्यास में 'लतिका' का असामान्य रूप में प्रस्तुत हुआ है। लतिका बाथम की पत्नी है। लतिका पहले हिन्दू थी, उसके माता-पिता ने ईसाई धर्म की दीक्षा ली थी। लतिका का बाथम के साथ प्रेम-विवाह होता है। वह अपनी गृहस्थी में पूरी तरह खो जाती है। वह एक आदर्श गृहिणी है; परंतु उसका पति

बाथम घण्टी की ओर आकृष्ट होता है। अपने पति के इस बेवफाई की वजह से लतिका उससे बोल-चाल बंद करती है। लतिका भाववेग में बाथम के बारे में सोचती है ''कैसी भयानक बात - उसी को स्वीकार करके क्षमा माँगना। बाथम ! कितनी निर्लज्जता है। मैं फिर क्षमा क्यों न करूँगी। परन्तु कर नही सकती। आह, बिच्छु के डंक-सी वे बातें ! वह विवाद ! मैने ऐसा नहीं किया, तुम्हारा भ्रम था, तुम भूलती हो-यही न कहना है ? कितनी झूठी बात ! वह झूठ कहने में संकोच नहीं कर सकता - कितना पतित... ''[29] लतिका बाथम के साथ सम्बन्ध विच्छेद करने का निर्णय लेती है। अपने जीवन में आए तूफान से पूरी तरह टूट जाती है; जबकि वह सुख शांति चाहती है। अतः लतिका अंत में पुनः हिंदू धर्म का स्वीकार कर समाज सेवा में जीवन व्यतीत करने का संकल्प करती है।

तात्पर्य प्रसाद ने पति के छल की वजह से नारी का मानसिक सन्तुलन किस तरह बिगड़ जाता है यह लतिका के चरित्रद्वारा स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है।

5.4.2.2 **घण्टी**

प्रसाद के 'कंकाल' उपन्यास में 'घण्टी' का असामान्य नारी के रूप में चित्रण हुआ है। घण्टी बाल विधवा है। वह फिर भी एक स्वच्छन्द जीवन जीने पर विश्वास रखती है। घण्टी राहगिरों से हँसी-मजाक करती रहती है। वह समाज के किसी भी नियम को नहीं मानती है। अपने इसी दुर्वर्तन के कारण घण्टी ब्रज की कुख्यात स्त्री के रूप में जानी जाती है। घण्टी विजय को अपना दिल दे बैठी है; इसलिए वह बिना किसी संकोच से, किसी बन्धन के बगैर विजय के साथ रहती है। विजय के शादी से इन्कार करने की वजह से घण्टी अपने खूद के उपर का विश्वास खो बैठती है। फिर यही घण्टी बाथम के साथ रहने लगती है। वह अपना धर्म बदलकर ईसाई धर्म में प्रवेश करती है और जल्द ही बाथम के साथ विवाह करने का निर्णय लेती है। घण्टी अपनी जिन्दगी में आई एक-के-बाद एक विपदाओं की वजह से अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है और निरर्थक बड़बड़ाने लगती है - ''मैं भीख माँगकर खाती थी, तब मेरा कोई अपना नहीं था। लोग दिल्लगी करते और मैं हँसती, हँसाकर हँसती। पहले तो पैसे के लिए, फिर, फिर चसका लग गया - हँसने का आनन्द मिल गया। मुझे विश्वास हो गया कि इस विचित्र भूतल पर हम लोग केवल हँसी की लहरों में हिलने-डोलने के लिए आ रहे हैं। आह !''[30] घण्टी पूरी तरह पागल हो जाती है और गली-मुहल्ले में भटकने लगती है। घण्टी की माँ उसे अपनी ममता से ठीक कर देती है। अपने जीवन में आए मुसीबतों के बवंडर में फँसी घण्टी अंत में समाजसेवा का दामन थामती है। इस प्रकार प्रसाद ने विधवा घण्टी असामान्य व्यवहार प्रस्तुत किया है।

प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यास के ज्यादातर नारी पात्र असामान्य व्यवहार करते नजर आते है। प्रसाद ने नारी के इस मनोविज्ञान को विशेषकर प्रेम-प्रसंगों के माध्यम से स्पष्ट किया है। नन्ददुलारे वाजपेयी प्रसाद के नारी के मनोविज्ञान विषय के बारे में कहते है कि - "मन में भरा हुआ अपरिमित स्नेह, स्वयं में एक निष्ठा के भाव का प्राचुर्य, विरोधी मनोवृत्तियों का पारस्पारिक संघर्ष और मन की कोमल तथा उदार वृत्ति एवं परिस्थितिवश कठोर हो जाने का विरोधी स्वाभाविक गुण प्रसाद की नारी के इस असाधारण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के कारण कहे जा सकते है। इसी लिए उनके नारी-मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति स्पष्ट रेखाओं में विभाजित नहीं हुई है।"[31]

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में पात्रगत विशेषताओं के आधार पर प्रसाद के उपन्यासों में आए नारी पात्रों का अलग-अलग विभाजन करने का प्रयास किया गया है। जो निम्नलिखित है -

1] कथा की दृष्टि से नारी पात्र

2] सामाजिक स्थिति की दृष्टि से नारी पात्र

3] वैचारिक दृष्टि से नारी पात्र

4] मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से नारी पात्र

इस विभाजन में प्रसाद के उपन्यासों में आए सभी नारी पात्रों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

कथा की दृष्टि से नारी-पात्रों के वर्गीकरण के अंतर्गत प्रमुख नारी-पात्र तथा गौण नारी-पात्र को रखा गया है। मुख्य कथा से जुड़े प्रमुख नारी पात्र है - किशोरी, तारा, तितली, शैला, इरावती और कालिन्दी और गौण कथा से जूड़े गौण नारी पात्र है - घण्टो, गाला, लतिका, सरला, सुभद्रा, श्यामदुलारी, माधुरी, राजकुमारी, उत्पला, मणिमाला आदि में अनेक नारी-पात्र समुह रूप में दिखाई देते है।

सामाजिक स्थिति के अनुसार नारी-जीवन के बदलते रूप के अंतर्गत पत्नी, प्रेमिका, माता, विधवा, वेश्या आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इन उपन्यासों में पत्नी रूप में तितली, नन्दरानी आदि का चित्रण हुआ है। प्रेमिका रूप में तारा, बन्जो तथा इरावती को प्रस्तुत किया गया है। यह प्रेमिकाएँ अपना प्रेम-आदर्श प्रस्तुत करने में सफल हुई है। विधवा रूप में घण्टी और राजकुमारी का चित्रण किया गया है। इन पात्रों द्वारा विधवा नारी की वास्तव स्थिति का चित्रण किया गया है। वेश्या रूप में तारा तथा मैना का सजीव चित्रण

उपस्थित किया गया है। माता रूप में किशोरी और श्यामदुलारी का चित्रण किया गया है। यह नारियाँ सन्तान से प्रेम पाने के लिए जीवन भर तड़पती है। अंत में कन्या, बहन, दासी, संन्यासिनी, भाभी तथा शिष्या रूप में उपस्थित हुए नारी-पात्रों का केवल नामोल्लेख किया गया है।

वैचारिक दृष्टि से नारी-पात्रों के वर्गीकरण के अंतर्गत परंपरावादी तथा विद्रोही नारी रूप का विश्लेषण किया गया है। परंपरावादी नारी पात्रों में तितली, श्यामदुलारी तथा नन्दरानी को प्रस्तुत किया गया है। 'तितली' की 'तितली' परंपरागत भारतीय नारी का प्रतिक है। 'तितली' की श्यामदुलारी परंपरागत माता रूप में चित्रित हुई है तथा नंदरानी परंपरागत भारतीय पत्नी के आदर्श का निर्वाह करती नजर आती है। विद्रोही नारी पात्रों में घण्टी, गाला तथा कालिन्दी का चित्रण किया गया है। ये नारी पात्र परिस्थितिवश विद्रोह करने के लिए प्रवृत्त हुए है।

मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से नारी पात्रों के वर्गीकरण के अंतर्गत सामान्य तथा असामान्य रूप में नारी-चित्रण किया गया है। 'तितली' की श्यामदुलारी अपने परिवार पर आई आपत्तियों के सामने अपनी हार मानती है। 'तितली' की माधुरी अपनी असाहय स्थिति के आगे कुछ नहीं कर पाती है। तथा राजकुमारी दुर्भाग्य के चक्र में सदा फँसी नजर आती है। असामान्य नारी पात्रों में लतिका तथा घण्टी का चित्रण किया गया है। 'कंकाल' की लतिका पति द्वारा छली नारी है। 'कंकाल' की घण्टी अपने स्वच्छन्द आचरण से पथभ्रष्ट हो जाती है।

जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यास में लगभग सभी वर्गों के नारी-पात्रों को उपस्थित करके उनका सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रसाद अपने प्रत्येक नारी-पात्रों को आदर्श की राह पर ले जाने में कामयाब हुए है। प्रसाद नारी के इसी आदर्शवत रूप के पूजक हैं। अतएवं प्रसाद समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी-पात्रों के निर्माण में सफल हुए है।

प्रसाद अपने उपन्यास में नारी-चरित्र के माध्यम से समाज में आदर्श-निर्माण के अपने लक्ष्य के बहुत नजदीक पहुँच गए हैं।

संदर्भ सूची

1. सुरेश सिन्हा - हिन्दी उपन्यास, पृ. 213-14
2. जयशंकर प्रसाद - तितली, पृ. 236
3. वही, पृ. 199
4. वही - कंकाल, पृ. 40

5. जयशंकर प्रसाद - तितली, पृ. 236
6. वही - इरावती, पृ. 26
7. वही - कंकाल, पृ. 183
8. वही - तितली, पृ. 144
9. वही - कंकाल, पृ. 77
10. वही - तितली, पृ. 150
11. वही - कंकाल, पृ. 21
12. वही - तितली, पृ. 219
13. डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी (हेलावी) - कृष्णसोबती के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन, पृ. 82
14. जयशंकर प्रसाद - तितली, पृ. 257
15. जयशंकर प्रसाद - तितली, पृ. 199
16. वही, पृ. 199-200
17. वही, पृ. 230
18. वही - कंकाल, पृ. 113
19. वही, पृ. 114
20. वही, पृ. 145
21. वही, पृ. 155
22. वही - इरावती, पृ. 38
23. वही, पृ. 39
24. डॉ. सुजाता - हिन्दी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृ. 16-17
25. वही, पृ. 135
26. जयशंकर प्रसाद - तितली, पृ. 143-144
27. वही, पृ. 75
28. वही, पृ. 204-205
29. वही - कंकाल, पृ. 102
30. वही, पृ. 120-121
31. नन्ददुलारे वाजपेयी - प्रसाद के नारी चरित्र, पृ. 135-136